Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ छठ खरना विधि ॥

॥ छठी मैया सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ दूसरे दिन का खरना ॥

छठ के दूसरे दिन को खरना या लोहंडा कहते हैं। यह सामान्यतः शुक्ल पंचमी से जुड़ा है। प्रचलित रीति में व्रती दिन में उपवास रखते हैं और संध्या में पूजा के बाद प्रसाद ग्रहण करते हैं। उसके बाद अगले सुबह के अर्घ्य तक का कठिन उपवास शुरू होता है।

दिन भर की तैयारी

स्नान कर शांत मन से सूर्यदेव और छठी मैया का स्मरण करें। घर के सदस्य प्रसाद की तैयारी में सहयोग दें। जल ग्रहण करने या न करने की रीति अलग हो सकती है; निर्जला उपवास स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित हो तभी करें।

खरना का प्रसाद

कई घरों में गुड़ से बनी चावल की खीर, घी लगी रोटी और फल चढ़ाए जाते हैं। कुछ स्थानों में दूध, गुड़ और चावल की मात्रा या अन्य नैवेद्य अलग होते हैं। पकवान ताजा बनाएँ और दूध वाली खीर को लंबे समय तक गर्म कमरे में न रखें।

संध्या पूजा

सूर्यास्त के आसपास घर के साफ पूजा-स्थान पर दीप जलाएँ। अपनी रीति के अनुसार सूर्यदेव और छठी मैया को प्रसाद अर्पित करें, प्रार्थना करें और फिर व्रती प्रसाद ग्रहण करें। स्थानीय सूर्यास्त का समय देखें।

॥ खरना के बाद का संकल्प ॥

प्रसाद बाँटना

व्रती के प्रसाद ग्रहण करने के बाद खीर, रोटी और फल परिवार व पड़ोसियों में बाँटने की परंपरा है। साफ पात्रों का उपयोग करें। जिन लोगों को दूध, गुड़ या अन्य सामग्री से परहेज हो, उनकी आवश्यकता का सम्मान करें।

आगे का उपवास

खरना के प्रसाद के बाद अनेक व्रती षष्ठी के पूरे दिन और रात्रि का निर्जला व्रत रखते हैं। अगले दिन संध्या अर्घ्य तथा उसके बाद सुबह उषा अर्घ्य होता है। परिवार व्रती के विश्राम और यात्रा में सहयोग करे।

स्वास्थ्य की जरूरत

गर्भावस्था, स्तनपान, मधुमेह, गुर्दे की समस्या, नियमित दवा या अस्वस्थता में लंबा निर्जला उपवास जोखिमपूर्ण हो सकता है। चिकित्सकीय सलाह लें। चक्कर, बेहोशी या तेज कमजोरी में तुरंत जल और सहायता लें; अपराधबोध न रखें।

खरना में शाम को प्रसाद ग्रहण करना और अंतिम पारण करना अलग चरण हैं। अंतिम पारण चौथे दिन उषा अर्घ्य के बाद होता है।

॥ सूर्यदेव और छठी मैया को प्रणाम ॥